Krishna Nand B.A I Hon's ① Freud का सिद्धान्त (Continue)

और दाढ़ी "ख" नाम के व्यक्ति से, पेशा "ग" नाम के के व्यक्ति से और पोशाक किसी "घ" नाम के व्यक्ति से मिलती है, लेकिन स्वप्नद्रष्टा उन सभी को एक साथ मिलाकर किसी "य" नाम के व्यक्ति के रूप में देखता है। इसीतरह स्वप्न में किसी स्थान या वस्तु को भी कुछ सामान्य विशेषता के आधार पर अनेक के बदले कोई "एक" स्थान या वस्तु दिखाई पड़ता है।

संघनन की प्रक्रिया का उद्देश्य स्वप्न के गुप्त विषयों को संक्षेप में प्रकट कर इसके वास्तविक रूप को गुप्त रखना होता है।

(ii) विस्थापन (Displacement) विस्थापन सेंसरशिप (Censorship) का कार्य करता है। स्वप्न के इस प्रक्रम द्वारा गुप्त विषय के पात्र या स्थान की जगह किसी दूसरे पात्र या स्थान अथवा घटना व्यक्त विषय की सामग्री बनकर प्रकट होती है। विस्थापन का यह कार्य दो प्रकार से होता है।

(A) गुप्त विषय का अवयव (पात्र, स्थान, वस्तु, घटना) के स्थान पर दूसरी वस्तु या स्थान या पात्र को देखना, अर्थात् गुप्त विषय के अवयव का पूर्ण स्थानापन्न हो जाता है, जिससे गुप्त विषय की गोपनीयता ज्यों की त्यों बनी रहती है।

(B) किसी महत्वपूर्ण गुप्त विषय के बदले महत्वहीन विषय को व्यक्त विषय के रूप में देखना। ऐसा करने से गुप्त विषय की वास्तविकता बिगड़ जाती है तथा वह अवास्तविक रूप में बदल जाती है। जैसे - किसी जानी पहचानी जगह के बदले अनजाने जगह को देखना।

विस्थापन की एक विशेषता यह होती है कि विस्थापित अवयव, गुप्त विषय के

Krishna Nand B.A I Hon's Freud का सिद्धान्त (Continue)

साथ अस्पष्ट और छद्म में जुड़े रहते हैं। इसी जुड़ाव या संबंध के आधार पर विश्लेषक का विश्लेषण कर स्वप्न के गोपनीय रहस्यों को उजागर करने का प्रयास किया जाता है।

(iii) प्रतीकीकरण (Symbolization) स्वप्न वस्तुतः अचेतन का प्रतीक है। अतः स्वप्न के व्यक्त विषय में गुप्त या अव्यक्त विषय की सामग्री विभिन्न प्रतीकों के रूपों में प्रकट होती हैं और ये प्रतीक प्रायः सार्वजनिक और काम या लैंगिक इच्छाओं के प्रतिनिधि होते हैं। जैसे गोले और मुलायम आकृति की वस्तुएँ (गेंद, आम, सेब आदि) स्त्री के स्तन के प्रतीक हैं, और बोतल, नाव, जहाज आदि स्त्रीलिंग की (Female sex organ) इसी प्रकार चढ़ना, उतरना, तैरना, नाचना (गति से संबद्ध क्रियाएँ) आदि संभोग के प्रतीक हैं।

(iv) नाटकीयता (Dramatization) स्वप्न के व्यक्तविषय मूर्त स्वरूप के होते हैं। अर्थात, स्वप्न द्रष्टा स्वप्न देखते समय ऐसा अनुभव करता है, मानो पर्दे पर कोई चलचित्र (film) या नाटक (drama) देख रहा हो। अभिप्राय यह है कि स्वप्न में अचेतन के गुप्त विषय विकृत रूप में आकर गतिशील चित्र की भाँति प्रकट होते हैं। इस स्वप्न रचना के कारण स्वप्न के गुप्त विषय दृश्य चित्र प्रतिमा की प्रत्यक्ष घटनाओं के रूप में व्यक्त होते हैं।

(v) पश्चात विस्तारण (Secondary elaboration) स्वप्न की विभिन्न अनुभूतियाँ असंगत, अतिरंजित, निरर्थक, अतार्किक एवं विचित्र स्वरूप की होती हैं। पर जब स्वप्न द्रष्टा जागृत अवस्था में अपने स्वप्न की अनुभूतियों का वर्णन करता है, तब वह अधिक सार्थक, तार्किक, संगत और नियमित